Q 8. Various ~~theories~~ theories of caste system in ancient India. [जाति प्रथा]

Answer → भारतीय जाति प्रणाली अपने ढंग की एक अनोखी संस्था है। इसके उद्भव तथा विकास के सम्बन्ध में अनेक विचार धाराएँ हैं। जाति प्रथा हिन्दू समाज की आधारशीला है जो अपने विकृत रूप में आज के समाज के लिए अभिशाप बन गयी है। इसका स्वरूप विभिन्नतामय और परिवर्तनशील रहा है। जाति प्रणाली हिन्दू समाज संगठन के विकास की एक अवस्था है। इस प्रथा का उद्भव परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के कारण हुआ। प्राचीन काल और परिस्थिति में इस संस्था का औचित्य जो भी रहा हो। किन्तु आज का समाज इसे सामाजिक विकार, अभिशाप और प्रगति में बाधक मानता है। इसकी उत्पत्ति का प्रश्न विवादग्रस्त और जटिल है। कुछ विचारकों ने भारतीय (i) कर्मकाण्ड का प्रतिफल समझा है तो कुछ ने (ii) वर्णव्यवस्था की देन (iii) किसी ने इसे ब्राह्मणों के स्वार्थ साधन का सहारा समझा है। (iv) कुछ ने आर्य अनार्य के मध्य होने वाले संस्कृति समन्वय का परिणाम।

अस्तु जाति प्रथा की उत्पत्ति के बारे में अनेक सिद्धांत प्रतिपादित हैं। इनमें से कुछ प्रमुख सिद्धांतों की चर्चा करना आवश्यक है —

(1) **परम्परात्मक सिद्धांत :—** जाति प्रथा की उत्पत्ति सम्बन्धित सिद्धांतों में यह सिद्धांत सबसे प्राचीन और विवादपूर्ण है। इस सिद्धांत की व्याख्या वेद, उपनिषद, स्मृतियां, संहिताओं, धर्मशास्त्रों तथा महाकाव्यों में मिलती है। यद्यपि इन ग्रन्थों में सिद्धांत के प्रतिकूल मौलिकता है परन्तु कुछ अन्तर भी पाया जाता है। इस सिद्धांत का आदि स्रोत ऋग्वेद के दसवें मंडल का ९०वां मंत्र है जिसे पुरुष सूक्त

कहते हैं। इस मन्त्र के ग्यारहवाँ और बारहवाँ ऋचा के अनुसार ब्राह्मण उसके मुख से उसकी भुजाओं से राजजन्य (क्षत्रिय) को उसकी जाँघों से वैश्य की उसके पाँव से शूद्रों की उत्पत्ति हुयी यथा —

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहूराजन्य उरूतदस्य
पद्भ्यां शूद्रो अजायत।

वृहदारण्य को उपनिषद के अनुसार ब्रह्मा के पहले देवताओं के चार वर्ण बनाये और उसी के आधार पर मनुष्यों में भी चार वर्ण बन गये।

धर्मशास्त्र :— धर्मशास्त्रों तथा महाकाव्यों में भी जाति प्रणाली के उद्‌भव संबंधित विचारों को प्रकट किया गया है। महाभारत में भृगु ने कहा है कि सबसे पहले ब्रह्मा ने ब्राह्मणों का सर्जन सृजन किया उसके बाद क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र का। तथा उसके रंगों की चर्चा की है कि ब्राह्मणों का रंग गोरे, क्षत्रिय का लाल, वैश्यों का पीला तथा शुद्रों का काला भरद्वाज ने भृगु के इस मत पर शंका व्यक्त की है कि वर्ण व्यवस्था रंग पर आधारित है तो रंग दो हजार है। इस पर भृगु ने इस समस्या का समाधान करते हुए कहा है कि केवल द्विज वर्ण ही था और बाद में उसने गुण और कर्मों कर्मों ह्रास के कारण अन्यवर्ण का विकास हुआ। महाभारत भी इसी सिद्धांत को मानता है।

स्मृति :— मनु के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि की रक्षा के लिए तपस्या कर सर्वप्रथम ब्राह्मण को अपने मुख से उत्पन्न किया। ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न होने तथा अन्य वर्णों से श्रेष्ठता के क्रम में पहले उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण श्रेष्ठ में श्रेष्ठ है।

2 **धार्मिक सिद्धांत —** इस सिद्धांत का प्रतिपादन सेनार्ट तथा होकार्ट ने किया। सेनार्ट ने जाति प्रथा की उत्पत्ति के लिए धार्मिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। इनके अनुसार वर्णव्यवस्था जाति प्रथा

का आधार नहीं है। उसने ग्रीस और रोम के प्रजातीय संगठन को भारतीय समाज से तुलना की है। उनके अनुसार प्रत्येक समाज में परिवार एक धार्मिक समूह होता है। जिसका मुख्य कार्य परिवार की पवित्रता बनाये रखना होता है। सेनार्ट के अनुसार इन पवित्रता के विचारों से भारत में अनेक समूहों का जन्म हुआ। इन समूहों में केवल पुजारी वर्ग पवित्रता की भावना पर दृढ़ रहे।

सेनार्ट के अनुसार एक जाति एक वंश परिवार से बनी जो सर्वथा अवैज्ञानिक और काल्पनिक है।

3 **प्रजातीय सिद्धांत :—**

इस सिद्धांत के प्रतिपादक का रिजले। घुरे, तथा मजुमदार आदि समाजशास्त्री और मानवशास्त्री है।

रिजले तथा घुरे :— रिजले तथा घुरे उन प्रथम विचारकों में है जिन्होंने प्रजातीय व्याख्या को एक वैज्ञानिक आधार दिया। इनके अनुसार आर्य प्रजाति प्रागैतिहासिक काल में फारस से भारत आये। उस काल में फारस का समाज चार भागों में बंटा था। आर्यों ने इसी सामाजिक संरचना को भारतीय समाज के लिए उपयुक्त समझा। आर्यों का संघर्ष भारत के मूल निवासी से हुआ जिस पर वे पूरा अधिकार जमा लिए थे। वे अपने साथ स्त्री नहीं लाये इसलिए अनुलोम विवाह प्रोत्साहित की जब उनके लायक लड़की मिल गयी तो वे अनुलोम विवाह को हटा दिये। इससे समाज में अनेक वर्ग का जन्म हुआ और यह समूह जाति बन गया।

घुरिये का विचार रिजले से मिलता है। आर्य एशिया के मूल निवासियों को पराजित कर दास बना लिया। आर्य विजेता थे इसलिए उन्हें गर्व था। वे अपने [illegible] को पवित्र मानते थे और अन्य मूल निवासियों को अपने से अलग इसी से जाति प्रथा बना

डा० मजुमदार ने जाति प्रथा को प्रजातीय दृष्टि से देखा मजूमदार ने पुर्तगाली भाषा के Castos शब्द से बने अंग्रेजी भाषा के Caste शब्द की व्याख्या की जिसका अर्थ समाज का विभाजन होता है। मजुमदार के अनुसार भा आर्य अपने साथ स्त्री नहीं लाये थे। अतः इन्डो आर्य और भारत के मूल निवासी प्राग द्रविड प्रजातियां के मिश्रण से बने। बाद में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य ने अपना-अपना स्थान ऊँचा रक्खा। शुद्र सबसे नीचे थे।

इस सिंद्धात की आलोचना सर्वप्रथम आलोचक हट्टन का है। इसके विरुद्ध उन्होनें निम्न विचार रखा। (1) प्रजातीय भेद अन्य देशों में पायी जाती है परन्तु यहां इस प्रकार की जाति व्यवस्था नहीं पायी जाती है।

(11) इस सिंद्धात में आर्थिक प्रश्न पर पेशो के चुनाव पर कोई प्रकाश नहीं डाला गया जो कि जाति प्रथा के निर्माण में प्रमुख कारण माना जाता है।

४) **आदिम संस्कृति का सिंद्धात :**— जे एच हटन ने प्रजातीय सिंद्धात की आलोचना की तथा प्रतिपादन भी। उनका विचार है कि जाति प्रणाली का विकास भारत में हुआ और उसे हम इसी देश की परिस्थितियों में सोचें तो उत्तम होगा।

इस देश के अछूते भागों में भी कुछ जन-जातियां हैं जिन पर किसी धर्म के विचार-धारा का प्रभाव नहीं पड़ा है। इनमें से कुछ ऐसी प्रथाऐं हैं जो जाति प्रणाली से मिलती जुलती है माना सिंद्धात के अनुसार भोजन करने वाले पर भोजन छुने वाले का, प्रभाव पड़ता है। इसलिए अपरि[illegible] के हाथ से भोजन करना हानिकारक है। महाभारत में आज भी कच्चे-पक्के भोजन निषेध है। इन निषेधों को हम आज्ञा माका

सिंद्धात से जोड़ सकते हैं वर्गों में ऊँचाई-निचाई का भेद आर्यों के सामाजिक प्रभाव के कारण हुआ।
इस सिंद्धात की भी आलोचना की गयी है कि माना सिंद्धात अन्यदेशों में भी पाया जाता है राय के अनुसार माना सिंद्धात भारतीय धाती प्रणाली में कहाँ तक योगदान दिया है यह संदिग्ध है।

(5) **सास्कृतिक एकीभाव का सिंद्धात :-**

इस सिंद्धात के प्रतिपादन शरद चन्द्र राय हैं। इनके अनुसार प्रागद्रविड सँस्कृति में आत्मतत्व की धारणा बहुत कम थी। इसके विपरीत इन्डो आर्य संस्कृति में कर्म की धारणा को मुख्य स्थान दिया गया। इन्डोआर्य की आध्यात्मिक गुण प्राग द्रविणों के सिंद्धातों से मिलता जुलता है। इसी कारण वर्ण व्यवस्था को इन्होंने बेरवटक अपनाया। इन्डो आर्य और प्राग द्रविडों की संस्कृतियों के एकी भाग से विभिन्न पेशे सम्प्रदायें प्रजातियाँ तथा अक्षरों पर बनी हुयी जातियों को चार वर्णों के अनुसार रखने की कोशिश की। राय के सिंद्धात का ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता ऊँच, नीच की भावना के व्यापकता को भी नहीं समझाया।

औद्योगिकी -

इसके प्रतिपादक डवेत सेन हैं। इनके अनुसार अर्थ उपार्जन के लिए विशेष प्रकार के पेशे को अपनाया गया। यह अवस्था श्रेणी-अवस्था कहलायी। श्रेणी इसलिए बने की एक पेशे वाले दूसरे पेशे वालों की सहायता कर उसकी रक्षा करें। धीरे-धीरे पेशे का आधार पर ईकाइयाँ संगठित होने लगी और इसने जाति का रूप ग्रहण किया।
हट्टन ने हुवेट सेन की इस सिंद्धात

की आलोचना की। हट्टन का विचार है कि हचेटसेन ने उन विशेषताओं पर प्रकाश डाला है जो जाति प्रणाली की विकास में सहायक थी, कारणों का उल्लेख नहीं किया, जो इसकी उत्पत्ति से सम्बन्ध रखता है। संसार के अन्य जनजातियाँ एवं श्रेणियाँ हैं लेकिन वहाँ जाति प्रथा क्यों नहीं उद्भव हुआ।

6 **आर्थिक सिद्धांत :—** इसके प्रतिपादक नेस्फिल्ड हैं उन्होंने जाति प्रथा के विकास को एक मात्र आर्थिक स्वरूप दिया। इनका कहना है कि शारीरिक रंग के आधार पर जाति नहीं बनी। शारीरिक लक्षण में कोई अंतर नहीं। जाति कर्म से हुआ। समाज में उच्च कर्म करने वाले उच्च जाति के एवं नीच कर्म करने वाले नीच जाति के। नेसफील्ड के इस मत में काफी औचित्य है फिर भी इसकी आलोचना की गई है। हट्टन ने कहा है कि डलिया डलिया बनाने वाले को निम्नजाति का माना गया लेकिन सोना की वस्तु को तैयार करने वाले को निम्न नहीं माना जाता है क्योंकि इन्हें ब्राह्मण या क्षत्रिय का स्थान दिया गया।

7 **राजनीतिक सिद्धांत :—** इस सिद्धांत के प्रतिपादक अबेडुवाय एक फ्रांसीसी पादरी थे। थे 17वीं शादी के अंत में भारत आया और 18 वर्ष रहने के बाद इसने हिन्दू समाजिक व्यवस्था पर एक पुस्तक लिखी "हिन्दू मैनर्स कस्टम एन्ड सेरेमनीज"

इसके अनुसार जाति प्रथा प्रणाली के तत्वधर्म आधारित हैं। इसने भारतीय सामाजिक व्यवस्था की तुलना ग्रीस, मिश्र एवं चीन से किया है तथा कहा है कि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति को एक निश्चित पेशे दिया जाता था और यह पेशा पुत्र को पिता से मिलता। कोई व्यक्ति अपने मन से

7.

पेशा नहीं बदल सकता।

भारतीय जाति व्यवस्था के सभी तत्व धर्म पर आश्रित थे। धर्म के अधिष्ठाता ब्राह्मण थे। ब्राह्मणों ने अपनी प्रभुता बनाये रखने के लिए धर्म का सहारा लेकर अपने पेशे को उच्च सिद्ध किया अबेदुबाय के अनुसार इस योजना के सहारे धर्म के अधिष्ठाता ब्राह्मण सम्पूर्ण देश पर अपनी प्रभुता स्थापित करने में सफल हुए।

---x---